दीप यज्ञों से जुड़े अनुशासन

शान्ति कुञ्ज
हरिद्वार

☎: ઘર : ૯૨ ઓ. ૪૭૮
※ સી. જે. પટેલ ※
પટેલ ઓટો એડવાઇઝર
-: એમ. જી. રોડ :-
કરીયા લાઇન, મું. ગોંડલ

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीप-यज्ञों से जुड़े अनुशासन

लम्बी अवधि से चली आ रही सघन तमिस्रा के पलायन का यह समय है। निशाचर अपने-अपने कोतरों में छिपने जा रहे हैं। दूसरी ओर उषा-काल के अरुणोदय की भी ठीक यही वेला है। दोनों ही कार्य सरलतापूर्वक अनायास ही सम्पन्न होने वाले नहीं हैं। नवयुग की अगवानी हेतु इन दिनों उन्हें प्रबल प्रयत्न करने होंगे, जो जागरूक हैं, प्रतिभा-सम्पन्न हैं और जिन्हें आपत्तिकालीन युग-धर्म का ज्ञान है। यह प्रसव-काल जैसा दुहरी समस्याओं वाला समय है। इसमें प्राणवानों को दुहरे मोर्चे पर लड़ना होगा। ऐसे समय में निजी सुख-सुविधाओं की उपेक्षा भी की जाती है और अग्नि-कांड, भूकम्प, बाढ़, महामारी जैसी आपत्ति-काल में उत्पन्न समस्याओं से सभी भावनाशीलों को जूझना पड़ता है। समय की यही माँग भी है और महाकाल की मूर्धन्यों के लिए पुकार भी।

इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य को साथ लेकर आ रही है। यह सतयुग की वापसी स्तर की है। दूसरी ओर जब चींटी मरने को होती है, तो पंख लगते हैं; बुझता हुआ दीपक पूरी शक्ति से लौ उछालता है। ऐसे दुहरे असमंजस के समय को 'युगसंधि' कहा गया है। यह सन् ६० से २००० तक का है। इसमें ध्वंस से निपटने और सृजन को समर्थ बनाने वाले दुहरे प्रयत्न करने हैं। नियति को दो मोर्चों पर जूझना है। योद्धाओं को दोनों हाथों से दुहरी तलवार चलानी है। देवसत्ता को अधिक सक्रिय और सहायक बनाने के लिए इन दिनों शान्तिकुञ्ज में युगसंधि महापुरश्चरण का आयोजन किया जा रहा है। इस केन्द्र को दैवी-सत्ता ने संधिकाल को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने का काम भी सौंपा है और तदनुरूप प्रेरणा और सामर्थ्य भी प्रदान की है। युग-संधि का, बहुमुखी प्रयोजनों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संबंधित यह विश्वव्यापी महान अभियान उसी के तत्त्वावधान में सम्पन्न हो रहा है। विदाई और स्वागत का दुहरा प्रयोजन पूर्ण करने वाला यह महान धर्मानुष्ठान सफलतापूर्वक सम्पन्न होकर रहेगा. यह भी सुनिश्चित है।

युग-संधि की प्रभात वेला में-दिव्य-सत्ता के प्रबल समर्थन में-जो कार्य चल रहे हैं, उसी को युग-संधि महापुरश्चरण भी कह सकते हैं। शान्तिकुञ्ज में इस हेतु अनेकों संकल्प किये गये हैं और उनके ठीक समय से पूरे होने की प्रबल संभावना भी है। प्रस्तुत संकल्पों में जिन प्रयासों को अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है, उनमें से एक है-एक लाख बड़े दीप यज्ञों का आयोजन और दूसरा इस हेतु एक करोड़ प्रज्ञा-पुत्रों को भागीदार बनाना। इन दोनों के सहारे ही भौतिक समस्याओं का समाधान एवं लोकमानस के परिष्कार स्तर का सतयुग की वापसी जैसा शक्ति-संचय हो सकेगा।

एक लक्ष विशाल दीप यज्ञों में १ करोड़ भागीदार सम्मिलित करने की योजना शान्तिकुञ्ज से बनी थी और उसका किसी एक बड़े स्थान पर कुंभ पर्व से भी अनेक गुना बढ़ कर आयोजन करने की व्यवस्था बनाने का उपक्रम पूरे उत्साह के साथ चल रहा था। इसी अवधि में एक नयी दिव्य प्रेरणा और अनुबंध अन्तरिक्ष से उतरा है। वह यह कि एक स्थान पर हजार दीपक जला लेने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा होगा कि हजार स्थानों पर हजार दीपक जला कर दीपावली जैसा ज्योति-पर्व मनाया जाय और उसकी जगमगाहट से सुविस्तृत क्षेत्र आलोकित किया जाय।

नव-निर्देशन के अनुसार प्रक्रिया नये सिरे से चल पड़ी है कि प्रज्ञा परिवार में जहाँ भी कर्मठ कार्यकर्ता अथवा छोटे-बड़े संस्थान हैं, वहाँ यह उत्साह भरा जाय कि वे अपने-अपने यहाँ दीपयज्ञ आयोजन सम्पन्न करें। इस प्रकार एक स्थान पर एक हजार यज्ञ-गुच्छक सम्पन्न होने की अपेक्षा वे एक लाख स्थानों पर सम्पन्न हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हजारों परिजनों को सम्मिलित करने के लिए समय रहते इतना प्रचार कार्य हो कि नियत संख्या में सम्मिलित होने वाले याज्ञिकों की कमी न पड़े। नई योजना के अनुसार अब एक लाख प्रज्ञा केन्द्रों में इन पाँच वर्षों में आयोजन सम्पन्न होंगे। वे हर साल भी होते रह सकते हैं। जहाँ उतना न बन पड़े, वहाँ एक वर्ष बीच में छोड़ कर, हर तीसरे वर्ष आयोजन करें, साथ ही यह भी ध्यान रखें कि सम्मिलित होने वालों में उन्हीं की पुनरावृत्ति न होती रहे, कुछ नये नर-नारी भी सम्मिलित होते रहें; ताकि युग शिल्पियों की संख्या में निरन्तर अभिवृद्धि होती रहे। हर साल एक ही जगह आयोजन न बन पड़े, तो समीपवर्ती अन्य स्थानों में भी उन्हें संपन्न किये जाने की योजना बन सकती है; ताकि नये स्थानों में, नये लोगों में भी युग चेतना का आलोक प्रज्वलित होता रहे और विस्तार-क्रम में निरन्तर अभिवृद्धि होती चले।

इसी माध्यम से छोटे-बड़े मंडलों का भी गठन होगा। जिन्हें मात्र दो घंटे जितने स्वल्प समयदान दे सकने का उत्साह ही उभरा हो, वे तो झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, स्लाइड प्रोजेक्टर, प्रचार पेटिका जैसे माध्यमों की सहायता से स्थानीय लोगों के साथ संपर्क साधते और उनमें प्राण-चेतना फूँकते रहें; पर जिन्हें ईश्वर ने अधिक साहसिकता, स्फूर्ति एवं उमंग भरी प्रतिभा प्रदान की है, उन्हें अपना कार्य-क्षेत्र समीपवर्ती मुहल्ले एवं गाँव-गाँव को जोड़ कर एक मंडल बना लेना चाहिए और उस समूचे परिकर में नव जीवन संचार करते रहने का उत्तरदायित्व वहन करते रहना चाहिए। प्रजातंत्र में जो कार्य जिलाधीश करते हैं, वही कार्यशैली अपने-अपने अधिकृत क्षेत्र के मंडलाधीशों को भी अपनानी चाहिए; ताकि इसी उपक्रम के सहारे देशव्यापी, विश्वव्यापी संगठन की शृंखला चल पड़े। हर कड़ी अपना-अपना काम करे, तो व्यापक संगठन बन जाने और उनकी संयुक्तशक्ति के सहारे नव सृजन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योजना व्यापक एवं समर्थ बनने में कोई कमी न रहे। मंडल कितना बड़ा हो, यह संयोजकों की अपनी क्षमता और दौड़-धूप के लिए अपनायी गयी स्फूर्ति पर निर्भर है।

अगले दिनों राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक सुव्यवस्था के अनेकानेक कार्यों का अभिनव संचालन करना होगा, साथ ही फैली हुई अवांछनीयताओं से जूझने का भी क्रम चलेगा। उपरोक्त कार्यों को, जो अपने मंडलों में ठीक तरह संपन्न करता रहेगा, उसकी गोदी में नेतृत्व का श्रेय भी अनायास जा पहुँचेगा। व्यवस्था परिवर्तन के लिए देश भर में ऐसे लाखों लोग चाहिए, जो मंडलाधीशों की भूमिका निभा सकें। उस महान कार्य का शुभारंभ एक लाख यज्ञों की योजना को कार्यान्वित करते हुए कम से कम श्रम और खर्च में सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। इसके लिए समुचित अनुदान-संग्रह करना पड़े, तो सहयोगियों के माध्यम से उदारशीलों से संपदा एकत्र कर यह किया जा सकता है। कम से कम खर्च की व्यवस्था बनायी जाय, तो प्रत्येक आयोजन से न्यूनतम दस हजार रुपये तो बचाये जा सकते हैं, जिनसे प्रचार उपकरण आदि खरीदे जा सकें। इतना बन पड़े, तो ही आयोजनों की सार्थकता है।

बड़े और प्रभावशाली दीपयज्ञ उन्हें ही माना जायेगा, जिनमें एक हजार वेदी यज्ञों की योजना बनायी गई हो। उनके लिए शान्तिकुञ्ज से प्रभावशाली कार्यकर्ता भी सुसंचालन में सहायता करने के लिए भेजे जा सकते हैं। इसके लिए जीपों, मोटर साइकिलों, प्रचार साइकिलों का भी प्रबंध केन्द्र में किया गया है।

सहस्रवेदी दीपयज्ञों का उद्देश्य जहाँ उस क्षेत्र में नवजीवन का, नवजागरण का बिगुल बजाना है वहाँ यह भी है कि धर्मक्षेत्र के मंडलाधीशों की महती आवश्यकता की भी इन्हीं दिनों पूर्ति हो सके। जनजागरण और जननेतृत्व की प्रक्रिया को भी साथ लेकर चलना है, अन्यथा व्यापक क्षेत्र में जनजागरण का, कार्य उतने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्साह से हो नहीं सकेगा, जितनी कि इन्हीं दिनों आवश्यकता है।

सहस्रवेदी यज्ञों के लिए सहयोगी जुटाने एवं धर्मक्षेत्र के मंडलाधीशों की जिम्मेदारी पूरी तरह निभाने के लिए प्रचार तंत्र और भी बड़ा एवम् समर्थ होना चाहिए। इसके लिए (१) झोला-पुस्तकालय (२) ज्ञानरथ (३) स्लाइड प्रोजेक्टर (४) परिवार में नवचेतना भरने वाली प्रचार पेटी (५) दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन (६) घरों में स्टीकर चिपकाने जैसे क्रिया-कलापों की आवश्यकता रहेगी ही। साप्ताहिक सत्संगों के लिए लाउडस्पीकर एवं टेपरिकार्डर की व्यवस्था हुए बिना बात बनती नहीं। इसलिए इन सभी प्रचार-उपकरणों की व्यवस्था करने तथा उनका प्रयोजन जानने की भी आवश्यकता है। यह सब शान्तिकुञ्ज के पाँच दिवसीय सत्रों में सरलतापूर्वक सीखा जा सकता है। वैसे भी हर प्रज्ञा परिजनों को इन दस वर्षों के लिए यह अनुशासन बताया गया है कि वे वर्ष में एक बार शान्तिकुञ्ज की एक सत्र-साधना संपन्न कर लिया करें। यह बैटरी चार्ज कराने के समान है। बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार बदलते समाधानों, निर्देशों को भी इस आधार पर उपलब्ध किया जा सकता है। विशेषतः यहाँ भागीदारी करने वालों को उनकी प्रसुप्त प्रतिभा को खराद पर चढ़ाने की दृष्टि से एक बार शान्ति कुञ्ज लेकर अवश्य आना चाहिए। जहाँ सहस्रवेदी दीप यज्ञ हों, वहाँ के संचालक भी प्रारंभ में संकल्प लेने आयें तथा समुचित शक्ति लेकर इस पुण्य-कार्य में जुटें।

साइकिलों की तीर्थ यात्रा का अपना निजी महत्त्व है। एक छोटी मित्र मंडली अपने क्षेत्र में साइकिलों द्वारा पद यात्रा पर निकला करें और गाँव-गाँव अलख जगाने का प्रयोजन पूरा करें, तो इससे भी अभीष्ट परिवर्तन बनने में कम सहायता न मिलेगी।

सहस्रवेदी दीपयज्ञों की योजना बनाने के लिए इन दिनों सभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभाशाली परिजनों को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया जा रहा है, ताकि उनके क्षेत्र में अभिवर्धन-परिवर्तन के चिह्न हाथों-हाथ दीखने लगें। इसके लिए उपयुक्त स्थान चयन के अतिरिक्त बिछावट तथा छाया-आच्छादन का प्रबंध करना पड़ता है। पूजा-वेदी एवं प्रवचन-प्रयोजन के लिए दो तखत सजाने पड़ते हैं। व्यवस्था ठीक बनी रहे, इसके लिए अपनों में से ही कुछ को सभा-सेवकों का उत्तरदायित्व सँभालने के लिए कहा जाना चाहिए।

शतवेदीय दीप यज्ञ तो मिल-जुलकर सदा ही अपने घरों में, मुहल्लों में करते रह सकते हैं। वे प्रायः दो घंटे में प्रातः या सायं-काल सुविधानुसार संपन्न हो सकते हैं; पर सहस्रवेदी यज्ञ में प्रायः पूरा एक दिन लगाने की आवश्यकता पड़ती है, ताकि न केवल पूरा कार्यक्रम हो, वरन् परस्पर परिचय तथा भविष्य के लिए कुछ करने का व्रत धारण अपनाने, प्रोत्साहन देने की अभीष्ट पृष्ठभूमि बन सके।

दिनभर के लिए घर छोड़कर आने वालों को कम से कम एक समय की भोजन व्यवस्था भी होनी चाहिए। यों यह कार्य एक-दो दुकानें लगा देने और सस्ता-सही भोजन मिलने की व्यवस्था बना देने से भी पूरा हो सकता है। पर यदि अधिक उत्साह दृष्टिगोचर हो, तो यह भी हो सकता है कि आयोजन में सम्मिलित होने वाले अपने-अपने घरों से दो-दो रोटियाँ एक प्लास्टिक की थैली या पत्तल में लपेटकर ले आया करें और सब लोग उसी में से मिल-बाँटकर एक समय की भोजन की आवश्यकता पूरी कर लिया करें। अमृताशन का प्रीतिभोज भी बिना कुछ अधिक खर्च किये मनोरंजन के वातावरण में सम्पन्न हो जाता है। साथ ही पारस्परिक घनिष्ठता की, जाति-पाँति, ऊँच-नीच की भेद-भाव वाली मूढ़-मान्यता से निपटने का अवसर भी मिल जाता है। भोजन व्यवस्था का प्रावधान रखने की दृष्टि से ही परिजनों से इस बार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org